Toppersnotes®
Unleash the topper in you

2nd ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 1

पेपर 2 - हिन्दी

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर

SIERRA INNOVATIONS

INDEX

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	उच्च माध्यमिक स्तर	
1.	वर्ण व्यवस्था	1
2.	शब्द-वर्गीकरण (स्रोत के आधार पर)	9
3.	शब्द-वर्गीकरण (व्याकरण के आधार पर)	11
4.	व्याकरणिक कोटियाँ	19
5.	शब्द-रचना	38
6.	शब्द-ज्ञान	111
7.	वाक्य रचना	151
8.	शब्द तथा वाक्य शुद्धिकरण	156
9.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	172

1 CHAPTER

वर्ण व्यवस्था

हिन्दी का भाषिक स्वरुप: हिन्दी का स्वनिम व्यवस्था खंड्य और खंड्येतर

- 'स्वनिम' का अर्थ है 'ध्वनि'। स्वनिम शब्द अंग्रेजी भाषा के 'फोनिक' का नवीनतम हिन्दी अनुवाद है। स्वनिम के लिए अब तक 'ध्वनिग्राम' और 'स्वनग्राम' शब्द का प्रयोग होता रहा है। किन्तु भारत सरकार के पारिभाषिक एवं तकनीकि शब्दावली आयोग में 'फोनिक' का हिन्दी अनुवाद 'स्वनिम' कर दिया गया।

स्वनिम की परिभाषा:

- भोलानाथ तिवारी के शब्दों में- "स्वनिम किसी भाषा की वह अर्थभेदक ध्वन्यात्मक इकाई है जो भौतिक यथार्थ में होकर मानसिक यथार्थ होती हैं तथा जिसमे एक से अधिक ऐसे उपसर्ग होते है जो ध्वन्यात्मक दृष्टि से मिलते-जुलते हैं। अर्थभेदक में असमर्थ तथा आपस में मुक्त वितरक होते है।"
- **देवेन्द्र नाथ शर्मा के शब्दों में-** "स्वनिम उच्चरित भाषा का वह न्यूनतम अंश है, जो ध्वनियों का अंतर प्रदर्शित करते हैं।"
- **डॉ० तिलक सिंह के शब्दों में-** "स्वनिम उच्चरित पक्ष की विषम स्वनिक अर्थ भेदक तत्व की इकाई स्वनिम है।"
- **ब्लूम फील्ड व डेनियर जोन्स ने स्वनिम को-** 'भौतिक' इकाई माना है।
- **एडवर्ड सापीर ने स्वनिम को-** 'मनोवैज्ञानिक' इकाई माना है।
- **डेनियल जान्स के शब्दों में-** "स्वनिम मिलते-जुलते ध्वनियों का परिवार है"
- **W. F. टवोडल ने स्वनिम को-** 'अमूर्त काल्पनिक' इकाई माना है।
- स्वनिम विज्ञान के प्रवर्तक 'महर्षि पाणिनि' है।
- स्वनिम विज्ञान लिपि निर्माण का मूलाधार है।
- **'स्वनिम'** शब्द 'संस्कृत' भाषा के 'स्वन' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है 'ध्वनि'। यह भाषा की सबसे लघुतम अखंड इकाई है।
- **ध्वनि के तीन पक्ष होते हैं-** उत्पादन, संवाहन और ग्रहण।
- 'स्वनिम' किसी भाषा विशेष से संबंध लघुतम सार्थक ध्वनि है।
- 'स्वनिम' शब्द अंग्रेजी के 'phoneme' शब्द का हिन्दी अनुवाद है।
- 'स्वनिम' किसी भाषा या बोली में उच्चरित ध्वनि की सबसे छोटी इकाई है।
- देवनागरी लिपि में- एक 'स्वनिम' के लिए एक ही चिह्न निश्चित है।
- स्वनिम भाषा की 'अर्थभेदक' इकाई है।

हिन्दी स्वनिम दो प्रकार के है-

1. **खंड्य स्वनिम (Segmental phonemes)**

   खंड्य स्वनिम के दो प्रकार है- 'स्वर' और 'व्यंजन'

- खंड्येतर स्वनिम (Supra-Segmental phonemes)
- बलाघात, अनुताप, मात्र/दीर्घता, अनुनासिकता, संहिता/ संगम,

खंड्य स्वनिम (Segmental phonemes)

ऐसी ध्वनियाँ जिन्हें हम स्वतंत्र रूप से उच्चरित कर सकते हैं। वे खंड्य स्वनिम कहलाती हैं। इनकी स्वतंत्र सत्ता होती है। 'काल' और 'प्रयत्न' की दृष्टि से इसका विश्लेषण किया जा सकता है।

इसके दो भेद है:

'स्वर' और 'व्यंजन' इन्हें अलग-अलग किया जा सकता है।

स्वर-

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओं औ = मूल स्वर 11 है।

अं अ: = 2 अयोगवाह

अं (अनुस्वार), अ: (विसग)

ह्रस्व स्वर- अ, इ, उ, ऋ = 4

दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ = 7

संयुक्त स्वर - ए, ऐ, ओ, औ = 4

व्यंजन- ('क' से 'ह' तक 33 अक्षर है)

क वर्ग- क ख ग घ ङ

च वर्ग- च छ ज झ ञ

ट वर्ग- ट ठ ड ढ ण (कठोर व्यंजन)

त वर्ग- त थ द ध न (ड, ढ उत्क्षिप्त व्यंजन)

प वर्ग- प फ ब भ म

य र ल व (अन्तस्थ व्यंजन)

य र ल व (अर्द्ध स्वर- 4)

श ष स ह (उष्ण व्यंजन- 4)

क्ष त्र ज्ञ श्र (संयुक्त व्यंजन- 4)

- हिन्दी में नासिक्य व्यंजन विवादास्पद स्थिति उत्पन्न करते हैं।
- 'म' तथा 'न' स्पष्ट स्वनिम हैं, जैसे- माला - नाला न्यूनतम युग्म मिलते हैं।
- 'न' तथा 'ण' भी न्यूनतम युग्म अनु (हिन्दी का उपसग) - अणु (कण के अर्थ में)
- क आधार पर स्वतंत्र स्वनिम हैं इसके बावजूद कि हिन्दी में 'ण' को 'न' पढ़ने की प्रवृत्ति (जैसे- गुण को गुन, प्राण को प्रान) विद्यमान है।
- न स्वतंत्र स्वनिम है और ङ, ज तथा न इसके उपस्वन हैं।

खंड्येतर स्वनिम (Supra-Segmental phonemes)

- जिन ध्वनियों का स्वतंत्र उच्चारण नहीं हो सकता है। वे खंड्येतर स्वनिम कहलाते हैं।
- खंड्येतर स्वनिम स्वतंत्र नहीं होते हैं। ये खंड्य स्वनिम पर निर्भर होते हैं। ये अव्यक्त तथा अविभाज्य हैं।

इसके मुख्य भेद निम्न हैं -

बलाघात, अनुताप, मात्र/दीर्घता, अनुनासिकता, संहिता/ संगम, ये सभी खंड्येतर स्वनिम हैं।

बलाघात (Stress, Loudness)

भाषा के व्यवहार में किसी अक्षर पर कम या आधिक बल देने की अवस्था बलाघात कहलाता है। सामान्यतः बलाघात किसी स्वन विशेष पर नहीं होकर अक्षर पर ही होता है। जिस अक्षर पर अधिक बलाघात होता है उसका स्वर उच्च होता है। बलाघात के कम या अधिक होने के कारण शब्दों के अर्थ बदल जाते है।

उदाहरण- पिताजी ने मुझे दस रुपये दिये।

अर्थ- पिताजी ने मुझे दस रुपये दिये, औरों को नहीं।

अनुतान या सूरलहर- (Tone and Intonation)

सामान्यतः अनुतान सुरों के उतार-चढ़ाव या आरोह अवरोह का क्रम है जो एक से अधिक ध्वनियों की भाषिक इकाई के उच्चारण में सुना जा सकता है। सूर में एक ध्वनि होता है। अनुतान में एक से अधिक ध्वनियों का समावेश होता है। इसका संबंध स्वर तंत्रियों के कंपन्न में अंतर से है। स्वरतंत्रियों के कंपन्न को तान कहा जाता है। कंपन्न की अधिकता और कमी अथवा सामान्य स्थिति के आधार पर उच्च निम्न और सम तीन भेद किया जा सकता है। कंपन में यह अंतर जब शब्द पर होता है तब इसे अनुतान कहते हैं। शब्द या वाक्य उच्चारण करते समय सूर या अनुतान में अंतर होने से अभिप्राय बदल जाता है। इसके आधार पर वक्ता की मनःस्थिति का अनुमान भी लगाया जा सकता है।

मात्रा / दीर्घता- (Length)

किसी भी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाले समय को दीर्घता या मात्रा कहा जाता है। कुछ स्वानों के उच्चारण में कम समय लगता है और कुछ के उच्चारण में अपेक्षाकृत अधिक। इस दृष्टि से हिन्दी में ह्रस्व, दीर्घ दो रूप है। संस्कृत में ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत तीन मात्राएँ होती है।

ह्रस्व: किसी स्वन में उच्चारण में लगने वाले समय की मात्रा कम है, जैसे- अ, इ, उ आदि।

दीर्घ: किसी स्वन में उच्चारण में लगने वाले समय की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक है, जैसे- आ, ई, ऊ आदि। उदाहरण- बला - बल्ला, बचा - बच्चा, लगी - लग्गी आदि।

प्लुत: किसी स्वन में उच्चारण में लगने वाले समय की मात्रा बहुत अधिक है, जैसे- संस्कृत में 'ओउम्' का 'ओउ' यह सर्वोत्तम उदाहरण है। हिन्दी में प्लुत स्वन नहीं है।

अनुनासिकता-

किसी भी ध्वनि के उच्चारण में जब हवा मुख के साथ साथ नाक से भी निकले वे अनुनाशिक ध्वनियाँ कहलाती है। जैसे- सास - साँस, चाँद, हँस, चाँदनी, आँचल आदि।

संहिता / संगम- (Juncture) शब्दों अथवा वाक्य के उच्चारण करते समय शब्दों के स्वरों या व्यंजनों के बीच रिक्त-स्थान के कारण आया हुआ अर्थ परिवर्तन संहिता/ संगम कहलाता है। यदि यह सीमा स्पष्ट नहीं हो तो अर्थबोध प्रभावित होता है और कई बार तो अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है। **उदाहरण-** होली- हो ली, तुम्हारे- तुम हारे, आदि।

ध्वनि एवं ध्वनियों का वर्गीकरण

- भाषा में उच्चारण की सबसे भौतिक ईकाइ 'स्वन' है जिसे ध्वनि के रूप में देखा और विश्लेषित किया जा सकता है।
- इसकी अवधारणा भाषा निरपेक्ष होती है। स्वनियों का उच्चरित रूप स्वन कहलाते है। अर्थात जब स्वनिम उच्चरित होते हैं तो वही स्वन कहलाते है।
- ध्वनि शब्द ध्वन धातु के साथ ईण 'ई' प्रत्यय जोड़ने से बनता है इसका अर्थ है आवाज।
- मानव जब बोलता है उसके मुख विवर से वायु निकलती है जो वागेन्द्रिय के द्वारा कुछ वाणी प्रकट करती है। उसी को स्वन अथवा ध्वनि कहा जाता है। स्वन भाषा का मूल आधार है। और स्वन चिन्हो के समूह का नाम भाषा है। स्वन अथवा ध्वनि ही वाणी, वाक, बोली आदि के रूप में व्यक्त होती है।
- व्यक्ति के मुख में विविध प्रकार की ध्वनियों के उत्पन्न करने की क्षमता होती है। ये विविध ध्वनियॉ मुख से नि:सृत होने के कारण विविध प्रकार की होती है परन्तु भाषा विज्ञान के अन्तर्गत हम संगीत या अन्य पशु-पक्षियों की ध्वनियों का अध्ययन नहीं करते अपितु केवल अ ध्वनियों का वर्णन करते है जिनका सम्बन्ध भाषा से होता हैं। उन्ही ध्वनियों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करके यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि उन निःसृत ध्वनियों के वर्गीकरण के मूल आधार क्या है। उन आधारों पर ध्वनियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है।

वर्गीकरण के आधार

1. स्थान
2. प्रयत्न
3. इन्द्रिय या करण

- स्थान के आधार पर - मुख्यता 8 स्थान ऐसे हैं जो ध्वनियों के उच्चारण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

    1. काकल
    2. कण्ठ
    3. तालव्य
    4. मूर्धन्य
    5. वर्त्स
    6. दॉत
    7. ओष्ठ
    8. जिह्वा

- प्रयत्न के आधार पर - मुख विविर के भीतर ओष्ठ से लेकर कण्ठष्य तक ध्वनिया तथा कंठ्य के नीचे ध्वनि उच्चारण में प्रत्येक व्यक्ति प्रयास करता है उसे प्रयत्न कहते हैं यहॉ दो भेद होते है।

    1. आभ्यन्तर प्रयत्न
    2. वाह्य प्रयत्न

आभ्यन्तर के 5 भेद होते हैं।

1. स्पृष्ट
2. ईषत्स्पृष्ट
3. ईषद विवृत्ति
4. विवृत
5. संवृत

वाह्य प्रयत्न के 11 भेद-

- विवार
- संवार
- श्वांस
- नाद
- घोष
- घोष
- अत्पप्राण
- महाप्राण
- उदान्त
- अनुदान्त
- स्वरित

करण के आधार पर - मुख विवर में स्थित उन इन्द्रियों को करण कहते हैं जो शतत गतिशील रहकर ध्वनियों के उच्चारण में सहायता पहुँचाया करती हैं स्थान और करण में अन्तर ही यह है कि स्थान तो स्थिर एवं चल होती है।

इस दृष्टि से अधरोष्ठ, जिहवा, कोमल ताल, स्वर तन्त्री को करण कहा जा सकता है।

ध्वनि भेद-

ध्वनियों के दो भेद माने जाते हैं

- स्वर
- व्यंजन
- **स्वर** —जिस ध्वनि का उच्चारण स्वयं किया जाता है, उसे स्वर कहते हैं ।

अर्थात

"स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चाण में हवा अवाध गति से मुख विवर से निकल जाती है।"

स्वरों का उच्चारण स्वतन्त्र रूप से किया जाता है।

स्वर 11 माने जाते हैं

(अ) स्वरों का वर्गीकरण -

स्थान के आधार पर -

1. कण्ठ्य- जिस स्वर का उच्चारण कण्ठ से होता है। कण्ठ्य स्वर कहते हैं। जैसे 'अ'
2. तालव्य - तालु से उच्चारित होने वाले स्वर
3. मूर्धन्य - जिस स्वर का उच्चारण मूर्धा से होता है, उसे मूर्धन्य स्वर कहते हैं जैसे 'ऋ'
4. दन्त्य - जिस स्वर का उच्चारण दन्त की सहायता से होता है, दन्त्य स्वर कहते हैं।
5. ओष्ठ्य - जिस स्वर का उच्चारण ओष्ठ से होता है, उसे 'ओष्ठ्य स्वर' कहते हैं। जैसे 'उ'
6. अनुनासिक - जिस स्वर का उच्चारण नासिका से होता है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं। जैसे अं
7. कण्ठतालव्य - जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ और ताल दोनों स्थानों से एक साथ होता है उन्हे कण्ठतालव्य स्वर कहते हैं। जैसे ए, ऐ
8. कण्ठोष्ठ्य - जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ, ओष्ठ दोनों से एक साथ होता है, उन्हे कण्ठोष्ठ्य स्वर कहते हैं। जैसे ओ, औ
9. दन्त्योठ्य - जिन स्वरों का उच्चारण दन्त तथा ओष्ठ से एक साथ होता है उसे दन्त्योठ्य कहते हैं जैसे व

प्रयत्न के आधार पर

1. जिह्वा की अवस्था के आधार पर
2. ओष्ठों की स्थिति के आधार पर
3. कण्ठ की मांसपेशियों की शिथिलता के आधार पर

जिह्वा की अवस्था के आधार पर जिहवा की आड़ी स्थिति -

1. अग्र स्वर - प्रायः स्वरों का उच्चारण करते समय जिह्वा की स्थिति त्रिभुजाकार हो जाती है। वह आगे की ओर उँची, पीछे की ओर उँची और बीच में नीची हो जाती है ऐसी अवस्था में जिस स्वर के उच्चारण करने में जिह्वा स्वर त्रिकोण की बॉयी ओर पड़े वह अग्र स्वर कहलाता है।
2. पश्च स्वर -जिस स्वर के उच्चराण में जिह्वा स्वर त्रिकोण के दाहिनी ओर पड़े वह पश्च स्वर कहलाता है। जैसे उ ऊ
3. मध्य स्वर - जिस स्वर के उच्चारण में जिहवा उस स्वर त्रिकोण के अन्दर पड़े, उसे मध्य स्वर कहते हैं। जैसे अ आ

जिह्वा की पड़ी स्थिति -

1. संवृत - जिस स्वर के उच्चारण में जिहवा बिना किसी प्रकार की रगड़ खाये पर्याप्त ऊँची उठ जाती हैं, उस स्वर को संवृत अर्थात बंद स्वर कहते हैं। जैसे ऊपर शब्द में ऊ संवृत स्वर है।
2. अर्धसंवृत - जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के उपरी भाग की दूरी संवृत स्वर की अपेक्षा अधिक होती है, उसे अर्धसंवृत कहा जाता है। जैसे - अनेक, देख आदि शब्दों में।
3. विवत - जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा अधिक स अधिक नीचे आ जाती है जिह्वा तथा मुख विवर के उपरी भाग के मध्य में अधिक से अधिक दूरी हो जाती है, उसे विवृत स्वर कहते हैं। जैसे- आम, आग
4. अर्धविवृत - जिस स्वर के उच्चारण में जिह्वा और मुख विवर के उपरी भाग की दूरी विवृत स्वर की अपेक्षा कम हो जाती है, उसे अर्धविवृत स्वर कहते हैं। जैसे - बोतल, कोट

ओष्ठों की स्थिति -

1. वृत्ताकार स्वर - जिस स्वर के उच्चारण में ओठों की रिथि वृत्ताकार हो जाती हैं उसे वृत्ताकार स्वर कहते हैं जैसे ऊ वृत्ताकार स्वर है।
2. अर्द्धवृत्ताकार स्वर - जिस स्वर के उच्चारण में ओष्ठों की आकृति पूर्णतया वृत्ताकार न होकर अर्द्धवृत्ताकार हो हो जाती है, उसे अर्द्धवृत्ताकार स्वर कहते हैं जैसे आ अर्द्धवृत्ताकार स्वर है।
3. अवृत्ताकार स्वर - जिन स्वरों के उच्चारण में ओष्ठ स्वाभाविक रूप से खुले रहते हैं अथवा वृत्ताकार, अर्द्धवृत्ताकार नहीं होती हैं, उन्हे अवृत्ताकार स्वर कहे हैं जैसे- इ, ई, ए, ऐ

कण्ठ की मांसपेशियों की स्थिति -

1. दृढ़ स्वर - जिन स्वरों का उच्चारण कण्ठ-पिटक और चिबुक के बीच में हमारे कण्ठ की मांसपेशिया दृढ़ हो जी हैं जैसे दीर्घ ई और उ दृढ़ स्वर होते हैं।
2. शिथिल स्वर - जिन स्वरों के उच्चरारण में कण्ठ पीटक चिबुक के बीच कण्ठ की मांस पेशियों में तनाव नहीं होता अपितु वे शिथिल रह जाती है शिथिल स्वर कहते हैं। इ, उ

(ब) व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजन वे भाषिक ध्वनियॉ है जिनके उच्चारण में मुख विवर में विकार उत्पन्न होता है। अर्थात उनके उच्चारण में मुख विवर में वायु प्रवाह को कहीं न कहीं बाधित होती हैं प्रायः व्यंज्जनों का स्वतन्त्र रूप से उच्चारण नहीं किया जाता। कोई न कोई व्यन्ज स्वर की सहायता के साथ ही उच्चरित होते हैं।

1. स्थान के आधार पर
2. प्रयत्न के आधार पर

(क) स्थान के आधार पर

1. कांकल्य - जिस व्यंज्जन का उच्चारण काकल स्थान से होता है, उसे कांकल्य व्यंज्जन कहते हैं इसके उच्चारण में मुख विवर खुला रहता है। और निःस्वास बन्द कण्ठ द्वार झटके के साथ खोलकर बाहर निकल पड़ता है। जैसे ह अंग्रेजी का h कांकल्य व्यंज्जन है।
2. कण्ठ्य - जिस व्यंज्जन का उच्चारण कण्ठ स्थान से होता है, उसे कण्ठ्य व्यंज्जन कहते हैं। इसके उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग कोमल तालु का स्पर्श किया करता है। जैसे क, ख, ग, घ कण्ठ्य व्यंज्जन होते हैं।

3. तालव्य - इसके उच्चारण में जिह्वाम कठोर ताल का स्पर्श किया करता है। जैसे च, छ, ज, ञ, श तालव्य व्यंजन हैं।

4. मूर्धन्य - जिस व्यंजन का उच्चारण मूर्धा से होता है उसे मूर्धन्य व्यंज्जन कहते है। इसके उच्चारण में तालु के पिछले भाग अर्थात मूर्धा स्पर्श किया करती है। जैसे ट, ठ, ड, ढ मूर्धन्य व्यंज्जन है।

5. वर्त्स्य - जिस व्यंज्जन का उच्चारण वर्त्स्य से होता है उसें वर्त्स्य व्यंज्जन कहते हैं उसके उच्चारण में जिह्वानीक तालु के अंतिम भाग एवं उपरी मसूड़ों का किया करती।

6. दन्त्य - जिन व्यंज्जनों का उच्चारण दंत पंक्ति से होता है उन्हे दन्त्य व्यंज्जन कहते हैं। उनके उच्चारण जिह्वा की नोक उपर की दन्त पंक्ति का स्पर्श किया करती हैं। जैसे त, थ, द, ध, न

7. ओष्ठिय - इनके उच्चारण में ओष्ठों का एक दूसरे से स्पष्ट होता है जैसे जिह्टवा मुख विवर में सरल निश्चेष्ट पड़ी रहती है। जैसे प, फ, ब, भ, म आदि।

8. दन्त्योष्ठय - जिन व्यंज्जनों का उच्चारण दन्त और ओष्ठ दोनों से होता है, उन्हे दन्त्योष्ठय व्यंज्जन कहते हैं इनके उच्चारण में दोनों ओष्ठों का परस्पर पूरा स्पर्श नहीं होता और जिह्वा का अग्र भाग कुछ उपर उठता है परन्तु दन्त्य, व्यंज्जनों के समान दांतो का स्पर्श नहीं करता जैसे व फारसी की फ स्वन और अंग्रेजी f स्वरें भी दन्त्योष्ठय मानी जाती है।

9. जिह्वामूलीय - जिन व्यंज्जनों का उच्चारण जिह्वा के मूल से होता है उन्हे जिह्वामूलीय व्यंज्जन कहते हैं। जैसे क, ख, ग आदि।

(ख) प्रयत्न के आधार पर

प्रयत्न के मुख्यतया दो भेद हाते हैं।

1. आभ्यन्तर
2. वाहय

अभ्यंतर के आधार पर व्यंज्जनों के आठ भेद होते हैं

1. **स्पर्श -** जिन व्यंज्जनों के उच्चारण अवयवों का पूर्णतया कम होता है अर्थात जिनके उच्चारण में जिहवा कण्ठ से लेकर ओष्ठ से सभी स्थानों पर स्पष्ट किया करती हैं उन्हे स्पर्श व्यंज्जन कहते हैं क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, प वर्ग के सभी व्यंजन स्पर्ष व्यंजन कहलाते हैं।

2. **स्पर्श संघर्षी -** जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्पर्श के साथ-साथ नि:स्वास के निकलने में हल्का सा संघर्षण भी होता है। उन्हे स्पर्श संघर्षी व्यंजन कहते हैं।

3. **संघर्षी -** जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मार्ग किसी एक स्थान पर इतना अधिक संकीर्ण हो जाता है कि नि:स्वास रगड़ खाकर बाहर निकलती है और उसमें बाहर निकलनें पर सर्प की सीत्कार जैसी उष्म ध्वनि होती है उन्हे संर्घषी व्यंजन कीते हैं। जैसे स, श, ष, ज आदि संघर्षी व्यंजन हैं।

4. **पार्श्विक -** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोक मूर्धा का स्पर्श करती है। और निःस्वास वायु जिहवा के अगल-बगल से बाहर निकलती है, उन्हे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। जैसे ल पार्श्विक व्यंजन है।

5. **लुण्ठित -** जिन व्यंजनों की स्थिति में जिहवा बेलन की तरह लपेट खाकर तालु का स्पर्श करती है। और जिहवा की नोक वर्त्स्य पर बार-बार ठोकर मारती है, वे लुण्ठित कहलाते हैं जैसे र र व्यंजन लुण्ठित हैं।

6. **उत्क्षिप्त -** जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा तालु के किसी भाग को झटके से छूकर हट जाती है, उन्हे उत्क्षिप्त व्यंजनें कहते हैं जैसे ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन होते हैं

7. **अंतस्थ या अर्धस्वर -** कुछ व्यंजन ऐसे होते हैं जो कभी स्वर की तरह और कभी व्यंजन की तरह बोले जाते हैं। जैसे य और व अर्धस्वर कहलाते हैं।

8. **अनुनासिक -** जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःस्वास वायु, मुख-विवर के साथ-साथ नासिका विवर से भी निकला करती हैं। उन्हे अनुनासिक व्यंजन कहते हैं। जेसे ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक व्यंजन होते हैं।

वाहय प्रयत्न के आधार पर -

व्यंजनों के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं

1. विवर - जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर-तंत्रियों पूर्णतया खुली रहती हैं, उन्हे विवर कहते हैं।
2. संवार - जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रियों बन्द हो जाती हैं उन्हें संवार कहते हैं जैसे ग, ब, द, ज आदि।
3. स्वास - प्रश्वास की क्रिया अबाध रूप से चलती रहती है, उन्हें स्वास व्यंजन कहते हैं। जैसे छ, फ, ठ आदि।
4. नाद - जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों के अन्तर्गत कम्पन होता है, उन्हे नाद कहते हैं। जैसे म, ण, न आदि।
5. अघोष - प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितिय व्यंजन को अघोष व्यंजन कहते हैं। जैसे क,ख च,छ आदि।
6. घोष - प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम व्यंजन को घोष व्यंजन कहते हैं। जैसे ग, घ, ड, ज, झ, ञ ड आदि।
7. अल्पप्राण - जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःश्वास वायु का कम प्रयोग होता है उन्हे अल्पप्राण कहते है। हिन्दी में प्रत्येक वर्ग के पहला, तीसरा व पाचवाँ व्यंजन क, ग, ङ।
8. महाप्राण - जिन व्यंजनों के उच्चारण में निःस्वास-वायु का अधिक प्रयोग होता है, उन्हे महाप्राण व्यंजन कहते हैं। अंग्रेज के अक्षर में h जोड़कर महाप्राण व्यंजन बनाये जाते हैं। जैसे $k + h$ (ख) $g + h$ (घ) आदि।
9. प्रत्येक वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ व्यंजन महाप्राण होते हैं जैसे ख, घ, छ, फ, म आदि।

क्लिक ध्वनियॉ-

प्रायः ध्वनियों के उच्चारण में निःस्वास वायु मुख विवर से बाहर निकला करती हैं। परन्तु संसार में कुछ ऐसी भाषाएॅ हैं। जिनका ध्वनियों के उच्चारण में नि:स्वास वायु के भीतर की ओर खींचा जाता है। इन्ही ध्वनियों को क्लिक ध्वनियों को क्लिक ध्वनियॉ कहते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2

CHAPTER

शब्द-वर्गीकरण (स्रोत के आधार पर)

शब्द

परिभाषा-

दो या दो से अधिक वर्णों से बने ऐसे समूह को 'शब्द' कहते है, जिसका कोई सार्थक अर्थ निकल रहा हो।

दूसरे शब्दों में वर्णों के सार्थक ध्वनि समूह को शब्द कहते हैं।

पद

परिभाषा-

जब कोई वर्ण समूह अकेला ही प्रयुक्त होता है तब तो वह शब्द कहलाता है परन्तु जब किसी वर्ण समूह का प्रयोग किसी वाक्य में किया जाता है एवं समूहों से वह अपना संबंध स्थापित कर लेता है, तब वह पद कहलाता है, जैसे 'पुस्तक' एक शब्द है, और "राम पुस्तक पढता है।”

इस वाक्य में 'पुस्तक' पद है।

शब्दों का वर्गीकरण:-

हिंदी व्याकरण में शब्दों का वर्गीकरण निम्न चार आधारों पर किया जाता है –

1. उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण
2. व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण
3. अर्थ के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण
4. रूप परिवर्तन के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण

1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर-

उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर शब्द निम्नलिखित पाँच प्रकार के माने जाते है –

i. तत्सम शब्द
ii. तद्भव शब्द
iii. देशज शब्द
iv. विदेशज शब्द
v. संकर शब्द

i. तत्सम शब्द

तत्सम शब्द तद् + सम के योग से बना है। यहाँ 'तद्' का अर्थ 'उसके' तथा 'सम' का अर्थ 'समान' है।

अर्थात् प्रत्येक भाषा की एक मूल भाषा होती है, तथा उस मूल भाषा के समान प्रयुक्त होने वाले शब्द तत्सम शब्द कहलाते है।

हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है। अतः ऐसे शब्द जो संस्कृत के समान ही हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, वे शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं।

जैसे – आम्र, सूर्य, चन्द्र, क्षेत्र इत्यादि।

ii. तद्भव शब्द

तद्भव शब्द 'तद्+भव' के योग से बना है। यहाँ 'तद्' का अर्थ 'उससे' तथा 'भव' का अर्थ 'उत्पन्न होने वाला' होता है।

अर्थात् ऐसे शब्द जो अपनी मूल भाषा संस्कृत से उत्पन्न होते हैं किन्तु भाषा विकास के कारण आज उनके उच्चारण में अन्तर आ गया है, वे तद्भव शब्द कहलाते है।

जैसे – आम, सूरज, चाँद, आग, खेत इत्यादि।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

iii. देशज शब्द

देशज शब्द 'देश + ज' के योग से बना है। यहाँ 'देश' का अर्थ 'क्षेत्र' (स्थान विशेष) तथा 'ज' का अर्थ 'जन्म देने वाला' होता है।

अर्थात् ऐसे शब्द जो किसी स्थान विशेष के लोगों द्वारा अपनी आवश्यकतानुसार बना लिए जाते है तथा सीमित क्षेत्र में ही प्रयुक्त किए जाते हैं, देशज शब्द कहलाते हैं।

ऐसे शब्द जिनकी उत्पत्ति का कहीं भी उल्लेख प्राप्त नहीं होता है, वे देशज शब्द कहलाते है।

जैसे – खिचड़ी, पेट, खचाखच, गड़बड़, रेवड़, थप्पड़, ऊबड़-खाबड़, छोहरा, छोहरी इत्यादि।

iv. विदेशज शब्द

विदेशज शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है- अन्य देश में जन्म लेने वाला।

अर्थात् ऐसे शब्द जो भारत देश से भिन्न किसी अन्य देश की भाषा में उत्पन्न हुए थे लेकिन आज उनकों हिन्दी भाषा में शामिल कर लिया गया है, एवं वे हिन्दी में इतने घुल मिल गए है कि उन्हें हिन्दी से पृथक् नहीं किया जा सकता, वे विदेशज शब्द कहलाते है।

अंग्रेजी :- पेन, कॉपी, रजिस्टर, चॉक, बैंक, ड्राफ्ट, चेक, कार, जीप, टेलीफोन, रेडियो, एजेण्ट इत्यादि।

अरबी :- आदमी, औरत, जिला, तहसील, मुहावरा, अलमारी इत्यादि।

फ्रेंच :- कूपन, मीनू, सूप इत्यादि।

जापानी :- रिक्शा, सुनामी, सायोनारा (अलविदा) इत्यादि।

चीनी :- चाय, तूफान, लीची इत्यादि।

v. संकर शब्द

संकर का शाब्दिक अर्थ होता है मिश्रण। अर्थात् ऐसे शब्द जो दो भिन्न भाषाओं के शब्दों से मिलकर बने हैं, वे संकर शब्द कहलाते हैं।

✓ रेलगाड़ी – अंग्रेजी + हिन्दी

✓ जाँचकर्ता – हिन्दी + संस्कृत

✓ टिकटघर – अंग्रेजी + हिन्दी

✓ लाठीचार्ज – हिन्दी + अंग्रेजी

✓ अग्निबोट – संस्कृत + अंग्रेजी

Toppersnotes Unleash the topper in you

3
CHAPTER

शब्द-वर्गीकरण (व्याकरण के आधार पर)

संज्ञा

साधारण शब्दों में 'नाम' को ही संज्ञा कहते हैं, जैसे- 'राम ने आगरा में ताजमहल की सुंदरता देखी।'
इस वाक्य में हम पाते हैं कि 'राम' एक व्यक्ति का नाम है, 'आगरा' स्थान का नाम है, 'ताजमहल' एक वस्तु का नाम है तथा 'सुंदरता' एक गुण का नाम है। इस प्रकार ये चारों क्रमशः व्यक्ति, स्थान, वस्तु और भाव के नाम हैं। अतः ये चारों संज्ञाएँ हुई।
परिभाषा- 'किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।'

संज्ञा के भेद:

संज्ञा के मुख्य रूप से तीन भेद हैं-

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा, 'विशेष' का बोध कराती है 'सामान्य' का नहीं। प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओं, समाचारपत्रों, दिनों, महीनों आदि के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति (वर्ग) के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। गाय, आदमी, पुस्तक, नदी आदि शब्द अपनी पूरी जाति का बोध कराते हैं, इसलिए जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं। प्राय: जातिवाचक संज्ञा में वस्तुओं, पशु-पक्षियों, फल-फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़-जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

3. **भाववाचक संज्ञा-** जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं। प्राय: गुण-दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्तभाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अंतर्गत आते हैं।

भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्य पाँच प्रकार के शब्दों से होती है-

1. जातिवाचक संज्ञा से
2. सर्वनाम से
3. विशेषण से
4. क्रिया से
5. अव्यय से

1. जातिवाचक संज्ञा से-

जातिवाचक संज्ञा	**भाववाचक संज्ञा**	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
शिशु	शैशव, शिशुता	सती	सतीत्व
विद्वान	विद्वत्ता	लड़का	लड़कपन
मित्र	मित्रता	गुरु	गौरव
पशु	पशुता	बच्चा	बचपन
पुरुष	पुरुषत्व		

2. सर्वनाम से-

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा	सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
मम	ममता/ममत्व	सर्व	सर्वस्व
स्व	स्वत्व	निज	निजत्व
आप	आपा	अपना	अपनापन/अपनत्व

3. विशेषण से-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
कठोर	कठोरता	नम्र	नम्रता
विधवा	वैधव्य	बुरा	बुराई
चालाक	चालाकी	मोटा	मोटापा
शिष्ट	शिष्टता	स्वस्थ	स्वास्थ्य
ऊँचा	ऊँचाई		

4. क्रिया से-

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा
सुनना	सुनवाई	पहचानना	पहचान
गिरना	गिरावट	खेलना	खेल
चलना	चाल	जीना	जीवन
कमाना	कमाई	चमकना	चमक
बैठना	बैठक	सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट	पढ़ना	पढ़ाई
जमना	जमाव		

5. अव्यय से-

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा
दूर	दूरी	मना	मनाही
ऊपर	ऊपरी	निकट	निकटता
धिक्	धिक्कार	नीचे	निचाई
शीघ्र	शीघ्रता	समीप	सामीप्य

सर्वनाम

भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है वह 'सर्वनाम' होता है। सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है 'सब का नाम'। अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इससे वाक्य सहज एवं सरल हो जाता है, जैसे- 'सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि सीता बीमार है।' इसके स्थान पर यदि यह कहा जाए 'सीता आज शाला नहीं आई क्योंकि **वह** बीमार है' तो सर्वनाम के प्रयोग से यह वाक्य अधिक सरल एवं सुंदर बन जाएगा।

परिभाषा- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे- मैं, तुम, वह, हम, आप, उसका आदि।

सर्वनाम के भेद: सर्वनाम के निम्नलिखित छह भेद हैं-

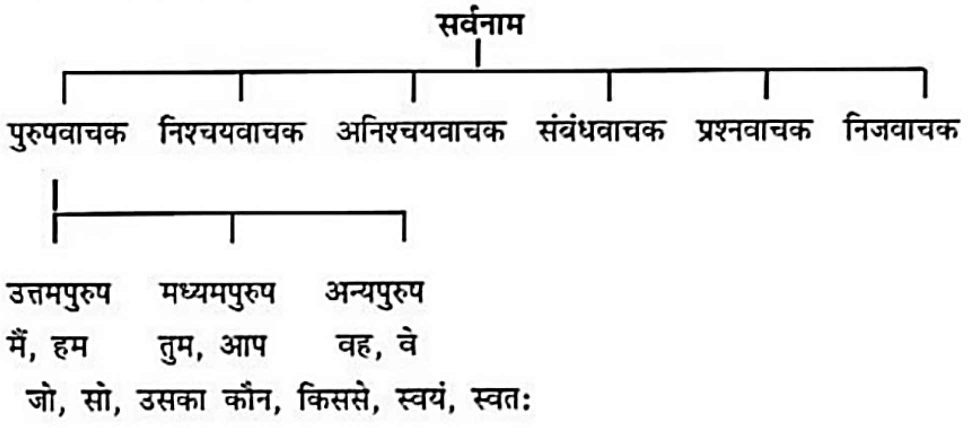

(i) पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनामों का प्रयोग कहने वाले, सुनने वाले व जिसके विषय में कहा जाए-के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं-

(अ) उत्तम पुरुष-बोलनेवाला या लिखनेवाला व्यक्ति अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है वे उत्तम पुरुप सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे-मैं, हम, हम सब, हम लोग आदि।

(ब) मध्यम पुरुप-जिसे संबोधित करके कुछ कहा जाए या जिससे बातें की जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे-तू, तुम, आप, आप लोग, आप सब।

(स) अन्य पुरुष-जिसके बारे में बात की जाए या कुछ लिखा जाए, उनके नाम के बदले में प्रयुक्त होनेवाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे-वे, वे लोग, ये, यह, आप।

(ii) निश्चयवाचक सर्वनाम- जो सर्वनाम निकटस्थ अथवा दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चित संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

Unleash the topper in you

इसके मुख्य दो प्रयोग हैं-

(i) निकट की वस्तुओं के लिए- यह, ये।

(ii)दूर की वस्तुओं के लिए- वह, वे।

(iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम से किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध होता हो जिसके विषय में निश्चित सूचना नहीं मिलती, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे- कुछ, कोई ।

- ✓ 'कोई' सर्वनाम का प्रयोग प्रायः प्राणिवाचक सर्वनाम के लिए होता है, जैसे- कोई उसे बुला रहा है।
- ✓ 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग वस्तु के लिए होता है, जैसे- पानी में कुछ है, घी में कुछ मिला है।

(iv) संबंधवाचक सर्वनाम- दो उपवाक्यों के बीच में प्रयुक्त होकर एक उपवाक्य की संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाला सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है, जैसे- जो, जिसे, जिसका, जिसको ।

उदाहरण:

- ✓ जो सोएगा, सो खोएगा।
- ✓ जिसकी लाठी उसकी भैंस।
- ✓ जो सत्य बोलता है, वह नहीं डरता।

(v) प्रश्नवाचक सर्वनाम- जिस सर्वनाम का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे- क्या, किससे, कौन।

उदाहरण:

- ✓ वहाँ दरवाजे पर कौन खड़ा है?
- ✓ कल तुम किससे बात कर रहे थे?
- ✓ आज तुम्हें क्या चाहिए?

(vi) निजवाचक सर्वनाम- ऐसे सर्वनाम जिनका प्रयोग वक्ता या लेखक (स्वयं) अपने लिए करते हैं, निजवाचक कहलाते हैं, यथा- आप, अपना, स्वयं, खुद आदि।

उदाहरण: 'मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ।', 'आप अपने घर कब जा रहे हैं?' इन वाक्यों में 'अपनी' तथा 'अपने' शब्द निजवाचक सर्वनाम हैं।

विशेषण

संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाला शब्द ही विशेषण कहलाता है। विशेषण के प्रयोग से व्यक्ति, वस्तु का यथार्थ स्वरूप तो प्रकट होता ही है साथ ही भाषा की प्रभावशीलता भी बढ़ जाती है।

परिभाषा- 'ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, विशेषण कहलाते हैं।'

विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है, वह शब्द **'विशेष्य'** कहलाता है, जैसे- नीला आकाश, छोटी पुस्तक एवं भला व्यक्ति में 'नीला', 'छोटी' एवं 'भला' शब्द विशेषण है तथा आकाश, पुस्तक एवं व्यक्ति विशेष्य हैं।

विशेषण के प्रकार:

विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं-

(i) गुणवाचक- ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रूप, रंग, आकार, स्वभाव अथवा दशा का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- पुराना कमीज, काला कुत्ता, मीठा आम आदि।

(ii) संख्यावाचक विशेषण- ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित संख्या, क्रम या गणना का बोध कराते हैं, वे संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं-

(अ) निश्चित संख्यावाचक- जैसे- एक, दूसरा, तीनों, चौगुना आदि।

(ब) अनिश्चित संख्यावाचक- जैसे- कई, कुछ, बहुत, सब आदि।

(iii) परिमाणवाचक- ऐसे शब्द जो किसी वस्तु, पदार्थ या जगह की मात्रा, तौल या माप का बोध कराते हैं वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। इसके दो उपभेद हैं-

(अ) निश्चित परिमाणवाचक- जैसे- दो लीटर, पाँच किलो एवं तीन मीटर आदि।

(ब) अनिश्चित परिमाणवाचक- जैसे- थोड़ा, बहुत, कम, ज्यादा आदि।

(iv) संकेतवाचक- ऐसे शब्द जो सर्वनाम हैं किंतु वाक्य में विशेषण के रूप मे प्रयुक्त हो रहे हैं अर्थात् संज्ञा की विशेषता प्रकट कर रहे हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं। चूँकि मूल रूप में ये सर्वनाम हैं इसलिए ये विशेषण 'सार्वनामिक विशेषण' भी कहलाते हैं।

जैसे- 'इस गेंद को मत फेंको।', 'उस पुस्तक को पढ़ो।', 'कोई सज्जन आए हैं।' इन वाक्यों में इस, उस तथा कोई शब्द सार्वनामिक अथवा संकेतवाचक विशेषण हैं।

(v) व्यक्तिवाचक विशेषण- ऐसे शब्द जो मूल रूप से व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं किंतु वाक्य में विशेषण का कार्य कर रहे हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं। यद्यपि ये स्वयं संज्ञा शब्द हैं किंतु वाक्य में अन्य संज्ञा शब्द की ही विशेषता बता रहे हैं, जैसे- बनारसी साड़ी, कश्मीरी सेब, बीकानेरी भुजिया आदि। इनमें बनारसी, कश्मीरी एवं बीकानेरी ऐसे ही संज्ञा शब्द हैं जो यहाँ विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

क्रिया

क्रिया का अर्थ है करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से ही होती है। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत है तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।

धातु- हिंदी क्रिया पदों का मूल रूप ही 'धातु' है।

धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते हैं, जैसे-

पढ़ + ना = पढ़ना

उठ + ना = उठना आदि।

परिभाषा- 'जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।'

क्रिया के भेद:

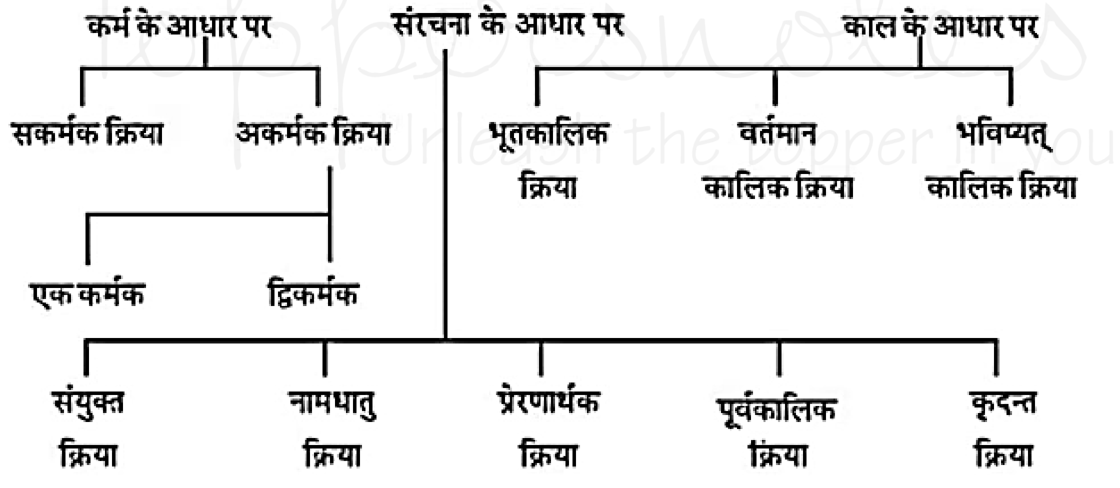

1. कर्म के आधार पर

क्रिया शब्द का फल किस पर पड़ रहा है, वह किसे प्रभावित कर रहा है, इस आधार पर किया जाने वाला भेद 'कर्म के आधार' क्रिया के भेद के अंतर्गत आता है। इस आधार पर क्रिया के प्रमुख दो भेद हैं-

(अ) सकर्मक क्रिया- 'स' अर्थात् 'सहित', अतः सकर्मक का अर्थ है- कर्म के साथ।

परिभाषा- जिस क्रिया का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़े, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। जैसे- 'बच्चा चित्र बना रहा है' या 'गीता सितार बजा रही है'।

अब यदि प्रश्न किया जाए कि बच्चा क्या बना रहा है तो उत्तर होगा- 'चित्र' (कर्म) तथा गीता क्या बजा रही है तो उत्तर होगा- 'सितार' (कर्म)।

✓ **सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं-**

(i) एककर्मक- जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे- 'माँ पढ़ रही है।' यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म (पढ़ना) हो रहा है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया- जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- 'अध्यापक छात्रों को कंप्यूटर सिखा रहे हैं।' क्या सिखा रहे हैं? - कंप्यूटर। किसे सिखा रहे हैं? - छात्रों को (छात्र सीख रहे हैं)। इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

(ब) अकर्मक क्रिया- जिस वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल केवल कर्ता पर ही पड़ता है कर्म की वहाँ संभावना ही नहीं रहती। उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे- 'आशा सोती है'।

2. संरचना के आधार पर-

वाक्य में क्रिया का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है, किस रूप में किया जा रहा है, के आधार पर किए जाने वाले भेद संरचना के आधार पर कहलाते हैं। इसके पाँच प्रकार हैं:

(अ) संयुक्त क्रिया- जब दो या दो से अधिक भिन्न अर्थ रखने वाली क्रियाओं का मेल हो, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं, जैसे- 'अतिथि आने पर स्वागत करो।' इस वाक्य में 'आने' मुख्य क्रिया है तथा 'स्वागत करो' सहायक क्रिया है। इस प्रकार मुख्य एवं सहायक क्रिया दोनों का संयोग है। अतः इसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रियाएँ एक से अधिक भी हो सकती हैं।

(ब) नामधातु क्रिया- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्द जब क्रिया धातु की तरह प्रयुक्त होते हैं, उन्हें 'नामधातु' कहते हैं और इन नामधातु शब्दों में जब प्रत्यय लगाकर क्रिया का निर्माण किया जाता है तब वे शब्द 'नामधातु क्रिया' कहलाते हैं।
जैसे-

✓ हाथ (संज्ञा) - हथिया (नामधातु) - हथियाना (क्रिया)

✓ (उदाहरण: नरेश ने सुरेश का कमरा हथिया लिया।)

✓ अपना (सर्वनाम) - अपना (नामधातु) - अपनाना (क्रिया)

✓ (उदाहरण: विनीत सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका है।)

(स) प्रेरणार्थक क्रिया- जब कर्ता स्वयं कार्य का संपादन न कर किसी दूसरे को करने के लिए प्रेरित करे या करवाए उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं, जैसे- 'सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।' इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक क्रिया है।

(द) पूर्वकालिक क्रिया- जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले संपन्न हुई हो तो पहले संपन्न होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं पर लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ये अव्यय तथा क्रिया विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं।

मूल धातु में 'कर' लगाने से सामान्य क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया का रूप दिया जा सकता है, जैसे-

✓ बलवीर खेलकर पढ़ने बैठेगा।

✓ वह पढ़कर सो गया ।

इन वाक्यों में खेलकर (' खेल' मूल धातु + कर) एवं पढ़कर (पढ़ मूल धातु + कर) पूर्वकालिक क्रिया कहलाएगी।

पूर्वकालिक क्रिया का एक रूप 'तात्कालिक क्रिया' भी है। इसमें एक क्रिया के समाप्त होते ही तत्काल दूसरी क्रिया घटित होती है तथा धातु + ते से इस क्रिया पद का निर्माण होता है, जैसे-

पुलिस के आते ही चोर भाग गया।

इसमें 'आते ही' तात्कालिक क्रिया है।

(य) कृदन्त क्रिया- क्रिया शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्ययों के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अंत में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती है। जैसे-

क्रिया	**कृदन्त क्रिया**
चल-	चलना, चलता चलकर
लिख-	लिखना, लिखता, लिखकर।

3. **काल के आधार पर-** जिस काल में क्रिया संपन्न होती है उसके अनुसार क्रिया के तीन भेद हैं-

(अ) भूतकालिक क्रिया- क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा बीते समय में कार्य के संपन्न होने का बोध होता है, भूतकालिक क्रिया कहलाती है, जैसे- 'वह विदेश चला गया।', 'उसने बहुत मधुर गीत गाया।'

(ब) वर्तमानकालिक क्रिया- क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान समय में कार्य के संपन्न होने का बोध होता है, वर्तमानकालिक क्रिया कहलाती है, जैसे- 'गीता हॉकी खेल रही है।', 'विमल पुस्तक पढ़ रहा है।'

(स) भविष्यत् कालिक क्रिया- क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा आने वाले समय में कार्य के संपन्न होने का बोध होता है, भविष्यत् कालिक क्रिया कहते हैं, जैसे-

✓ गार्गी छुट्टियों में कश्मीर जाएगी।

✓ दिनेश निबंध प्रतियोगिता में भाग लेगा।

क्रिया विशेषण

क्रिया की विशेषता बताने वाले पद को क्रिया-विशेषण कहते हैं।

क्रिया-विशेषण चार प्रकार के हैं:

(1) स्थानवाचक क्रिया-विशेपण

(2) कालवाचक क्रिया विशेषण

(3) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(4) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

1. **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण:**

ये दो प्रकार के हैं-

(i) स्थितिवाचक - यहाँ, वहाँ, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आगे, पीछे, साथ, पास, निकट, सर्वत्र।

(ii) दिशावाचक - इधर, उधर, दूर, बाएँ, दाएँ, उस ओर, चारों ओर।

2. **कालवाचक क्रिया-विशेषण:**

ये तीन प्रकार के हैं-

(i) समयवाचक - आज, कल, परसों, सुबह, शीघ्र, अब, तब, अभी, तुरंत, दोपहर को, रविवार को, पहले, पीछे।

(ii) अवधिवाचक - आजकल, नित्य, सदा, दिन भर, सुबह से, शाम तक, दो घंटे तक।

(iii) पौनःपुन्यवाचक - बार-बार, प्राय:, कई बार, हर बार, प्रति दिन, अक्सर, बहुधा।

3. **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण:**

ये नौ प्रकार के हैं-

(i) प्रकारवाचक - ऐसे, वैसे, जैसे, कैसे, धीरे-धीरे, जैसे-तैसे, यों ही, कुशलतापूर्वक, ध्यान से, जोर से, प्रेम से, अच्छी तरह, रोते हुए, पैदल, हँसते हुए।

(ii) निश्चयवाचक - अवश्य, जरूर, सचमुच, यथार्थत:, वस्तुतः, निस्सन्देह, बेशक, वास्तव में, दरअसल, अलबत्ता, यथार्थ में, असल में, बिलकुल, निश्चित रूप से।

(iii) अनिश्चयवाचक - कदाचित्, शायद, संभवतः, यथासम्भव, अंदाजन, हो सकता है, संभव है।

(iv) स्वीकृतिवाचक - हाँ, अच्छा, सही, ठीक।

(v) निषेधवाचक - न, नहीं, मत, थोड़े ही।

(vi) आकस्मिकतावाचक - सहसा, अचानक, एकाएक।

(vii) कारणवाचक - क्योंकि, अत: इसलिए, मजबूरन।

(viii) प्रश्नवाचक - कहाँ, कब, किधर, कैसे, क्यों, किसलिए, क्योंकर।

(ix) अवधारक - ही, भर, तक, भी, पर्यन्त, मात्र, तो। (ये क्रिया की सीमा निर्धारित करते हैं।)

4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण:

ये पाँच प्रकार के हैं-

(i) अधिकतावाचक - अधिक, अति, अतिशय, ज्यादा, खूब, बारम्बार, पुनः पुनः, लगातार, पूर्णतया।

(ii) न्यूनतावाचक - थोड़ा, जरा-सा, रंचमात्र, तनिक, लगभग, किंचित, थोड़ा-बहुत, लेशमात्र, कुछ।

(iii) पर्याप्तवाचक - यथेष्ट, काफी, पर्याप्त, बहुत कुछ, पूरा, ठीक।

(iv) श्रेणीवाचक - थोड़ा-थोड़ा, तिल-तिल, क्रम-क्रम से, बारी-बारी से, एक-एक करके, ज्यादा-ज्यादा, यथाक्रम।

(v) तुलनावाचक - कम, अधिक, ज्यादा, इतना, उतना, कितना, जितना, बढ़कर।

Toppersnotes
Unleash the topper in you